# शिक्षा का अधिकार एवं मूल अधिकार के अन्तर्गत संवैधानिक प्रावधान

**प्रो0 इरा यादव**

**राकेश रौशन**

किसी भी व्यक्ति, समाज व देश की नियति उसकी शिक्षा पद्धति पर निर्भर है। विकास और प्रगति के सारे रास्ते शिक्षा से होकर गुजरते हैं। क्या सही है और क्या गलत इसका ज्ञान शिक्षा से ही प्राप्त होता है। शिक्षा ही हमें विस्फोटक दृष्टिकोण प्रदान करती है। अंग्रेज साहित्यकार बेकन के इस कथन में बड़ी सच्चाई है कि ज्ञान ही शक्ति हैं। अर्थात् ज्ञान ही व्यक्ति को, समाज को अथवा राष्ट्र को शक्ति सम्पन्न बनाता है। पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानी सिंह व खरगोश का भी यही संदेश है कि बुद्धि की शक्ति शरीर–बल से श्रेष्ठ है। सभी प्राणियों में मानव इसलिए श्रेष्ठ एवं अद्वितीय है, क्योंकि उसमें बुद्धि हैं, जबकि अन्य प्राणियों में नहीं।